मंजूर एहतेशाम के कथा साहित्य में चित्रित मुस्लिम समाज की स्थिति

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड के मानव्य विद्याशाखा अंतर्गत पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध की रुप-रेखा

अनुसंधान-कर्ता
आसिया बेगम
एम.ए. (हिंदी), एम.फिल.

निर्देशक
डॉ.जहीरुद्दिन रफियोद्दिन
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
कै.बाबासाहेब देशमुख गोरठेकर महाविद्यालय,
उमरी जि.नांदेड.

जुलाई - 2017

मंजूर एहतेशाम के कथा साहित्य में चित्रित मुस्लिम समाज की स्थिति

* भूमिका
* अनुसंधान
* अनुसंधार कार्य का पूर्वानूमान
* अनुसंधान कार्य की उपयोगिता
* अनुसंधान पद्धतियाँ
* अनुसंधान की सीमाएँ
* अनुसंधान की रुप-रेखा

प्रथम अध्याच्य - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य में चित्रित मुस्लिम समाज की स्थिति

द्वितीय अध्याय - मंजूर एहतेशाम : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

तृतीय अध्याय - मंजूर एहतेशाम के कथा साहित्य में चित्रित मुस्तिम समाज की स्थिति

चतुर्थ अध्याय - मंजूर एहतेशाम के कथा साहित्य में चित्रित भारत की मिली-जूली संस्कृति

पंचम अध्याय - मंजूर एहतेशाम के कथा साहित्य में चित्रित आज़ाद भारत में मुस्लिम समाज की छवि

षष्टम अध्याय - मंजूर एहतेशाम के कथा साहित्य में चित्रित मुस्लिम समाज के अंतर्विरोध एवं उनकी समस्साएँ

सप्तम अध्याय - उपसंहार एंव निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ सुचि

*	**भूमिका :-**

समाज और साहित्य का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है । समाज के बिना साहित्य की कल्पना नहीं की जा सकती । साहित्य अपनी संपूर्ण आवश्यक सामग्री समाज से ही ग्रहण करता है । जैसे-कथावस्तु, चरित्र, विचार, दर्शन, भाषा, ज्ञान आदि । वस्तुत: "समाज साहित्य की प्रारंभिक सामग्री है ..... समाज साहित्य का बीज है और साहित्य समाजरुपी बीज से विकसीत वट-वृक्ष है, समाज विविध प्रकार के जलकणों का बिखरा हुआ स्वरुप है और साहित्य उन जलकणों से निर्मित विशाल सागर है । यही कारण है कि साहित्य के निर्माण में समाज का सर्वाधिक योगदान रहता है ।" ठीक उसी प्रकार समाज की उन्नति में, संस्कृति और सभ्यता के विकास में साहित्य का भी अनन्यसाधारण योगदान रहता है ।

साहित्य में सत्यम, शिवम, सुंदरम् की प्रतिष्ठा रहती है । समाज में फैले हुए विषाद को यहाँ त्राण मिलता है । उपन्यास सम्राट प्रेमचंद ने 'साहित्य को समाज का दर्पण' कहा है । साहित्य में युगीन समाज अपने दूर परिवेश के साथ जीवंत हो उठता है । सच तो यह है कि साहित्यकार अत्यंत संवेदनशील तथा भावुक होता है । वह कल्पना शक्ति के बल पर अमूर्त और अप्रत्यक्ष को मूर्त और प्रत्यक्ष कर देता है । लोकमंगल की भावना तो रचनाकार का मुख्य प्रयोजन होता है । अत: समाज की पीडा उसकी पीड़ा बन जाती है, समाज का दुख उसका अपना दुख बन जाता है ।

भारतीय साहित्य की धारा अजस्त्र है । संस्कृत से आरंभ होकर यह आज हिंदी और देश की विभिन्न भाषाओं में धमनियों में रक्त की तरह अबाध गति से प्रवाहित हो रही है । हिंदी साहित्य के लगभग एक हजार वर्षों के प्रदीर्घ इतिहास में समय-समय पर कई नई धाराएँ, नई प्रवृत्तियाँ, नए वाद और नए आंदोलनों का जन्म एंव अस्त होता रहा है । पर हिंदी साहित्य ने इन हजार वर्षों में अपना भारतीय समाज, उसकी सभ्यता एंव संस्कृति, आदर्श एवं मूल्य, आध्यात्मिक चेतना आदि को अपने से अलग नहीं होने दिया । चाहे वह इस्लाम दर्शन से प्रभावित सूफी एंव संत काव्य हो, अँग्रेजी रोमाँटिसिइम से प्रभावित छायावाद हो या फिर कार्ल मार्क्स के शुद्ध साम्यवादी विचारों से प्रभावित प्रगतिवादी काव्यधारा हो । वस्तुत: हिंदी का आदिकालीन, मध्यकालीन और आधुनिक काल का साहित्य

तत्कालीन भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के रेखाचित्र करता है।

आज विश्व और स्वयं भारत देश भी संक्रमण के जिस दौर से गुजर रहा है, उसने देश और दुनिया की संस्कारों के समक्ष ही नही, बल्कि समाज, संस्कृति ओर साहित्य के समाने भी कई चुनौतियाँ और सवाल खडे कर दिए है। भारत देश आज गरीबी, दरिद्रता, भूखमरी, बेकारी, महँगाई, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, जातिवाद, संप्रदायवाद, प्रांतवाद, भाषावाद, नक्सलवाद, आतंकवाद जैसी कई समस्याओं से लगातार जूझ रहा है, किंतु समस्याएँ कम होने की बजाए दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है।

भारतीय समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा, मुस्लिम समाज आज़ादी के बाद से लगातार पिछड़ता जा रहा है, अनेक समस्याओं से जूझ रहा है, अंतर्विरोधों में जी रहा है और निरंतर सांप्रदायिक दगों की आग में जल रहा है। अत: इसका प्रत्यक्ष प्रभाव हमारे संपूर्ण समाज-जीवन और राष्ट्र-जीवनपर देखने को मिल रहा है। क्योंकि भारतीय मुस्लिम समाज की समस्या केवळ मुसलमान की समस्या नहीं है, अपितु वह हमारी राष्ट्रीय समस्या है। हिंदी साहित्य इन सवालों को हल करने में, देश में सद्भाव एवं भाईचारा,मंगल और शांति की स्थापना में निरंतर प्रयासरत है। हिंदी कथाकार भी अपने इस दायित्व को बडी ही ईमानदारी से निभाने की कोशिश कर रहे है। हिंदी के मुस्लिम कथाकारों की सूचि में सही मासूम रजा, शानी, अब्दुल बिस्मिल्लाह, असगर वजाहत के आगे एक नाम और जुड गया है, मंजूर एहतेशाम।

मंजूर एहतेशाम का जन्म 03 अप्रैल, 1948 को भोपाल में हुआ। मंजूर एहतेशाम मूलत: उपन्यासकार है। इनके अब तब कूल छह उपन्यास - **कुछ दिन और, सूखा बरगद, दास्तान-ए-लापता, बशारत मंजिल, पहर ढलते और मदरसा** - प्रकाशित हो चुक है। इन उपन्यासों का हिंदी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान है। उपन्यासों के अलावा उनके **तसबीह, तमाशा** तथा अन्य कहानियाँ आदि कहानी-संग्रह भी हिंदी में पर्याप्त लोकप्रिय हुए हैं। मंजूर एहतेशाम वस्तुत: गंगा-जमुनी तहजीब के लेखक है। मंजूर एहतेशाम जी ने अपने उपन्यास एंव कहानियों में भारत की मिली-जुली संस्कृति, मुस्लिम समाज की स्थिति, मुस्लिम समाज के अंतर्विरोध एवं उनकी समस्याएँ, आजाद भारत में उसकी छबि आदि का

अत्यंत स्पष्ट, किंतु मार्मिक चित्रण किया है । उनके उपन्यासों के विषय में कहा जाता है, कि उनमें भारतीय मुस्लिम समाज की मुकम्मील तस्वीर है तथा मुस्लिम समाज की समस्याओं की जड़ तक पहुँचने की ईमानदार कोशिश । इस दृष्टि से उनके सूखा बरगद और बशारत मंज़िल यह दो उपन्यास विशेष उल्लेखनिय हैं । इसीलिए मैंने अपने अनुसंधान का शीर्षक **'मंजूर एहतेशाम के कथा साहित्य में चित्रित मुस्लिम समाज की स्थिति'** दिया है । प्रस्तुत अनुसंधान कार्य को छह अध्यायों में विभाजित किया जाएगा ।

* **अनुसंधान कार्य का हेतू और उद्देश्य -**

अनुसंधान कार्य को निश्चित दिशा देकर उससे वस्तुनिष्ठ जानकारी प्राप्त करने के लिए अनुसंधान कार्य के हेतु एवं उद्देश्य की आवश्यकता होती है । प्रस्तुत अनुसंधान कार्य के पीछे निम्न सकारात्मक हेतु एंव उद्देश्य है -

1. भारतीय मुस्लिम समाज की यथार्थ स्थिति को जान लेना ।
2. मंजूर एहतेशाम जी एंव उनके समकालीन कथाकारों का अध्ययन करना ।
3. मंजूर एहतेशाम के कथा साहित्य में चित्रित **मुस्लिम समाज की स्थिति को जान लेना ।**
4. मंजूर एहतेशाम के कथा साहित्य में चित्रित भारत की मिली-जुली संस्कृति का अध्ययन करना ।
5. मंजूर एहतेशाम के कथा साहित्य में चित्रित मुस्लिम समाज के अंतर्विरोध एवं उनकी समस्याओं को जान लेना ।

* **अनुसंधान कार्य का पुर्वानुमान -**

किसी भी विषय पर अनुसंधान कार्य करने से पूर्व उसके पूर्वानुमान को जान लेना एंव प्रतिपादित करना आवश्यक होता है, जिससे अनुसंधान कार्य सफलता की ओर बढ़ता है । प्रस्तुत अनुसंधान के लिए निम्न पुर्वानुमान निर्धारित किए है -

1. साहित्य समाज का दर्पण होता है
2. अपना सामाजिक परिवेश ही लेखक को लेखन की प्रेरणा देता है ।

3. मंजूर एहतेशाम का कथा साहित्य में भारतीय मुस्लिम समाज की यथार्थ स्थिति पर आधारित है ।
4. मंजूर एहतेशाम का कथा साहित्य वर्तमान भारतीय मुस्लिम समाज का प्रासंगिक आख्यान है ।
5. मंजूर एहतेशाम का कथा साहित्य सामाजिक एंव राष्ट्रीय सरोकारों से जुड़ा है ।
6. मंजूर एहतेशाम भारत की गंगा-जमुना तहज़ीब, आपसी भाईचारा, सांप्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के पक्षधर हैं ।
7. मंजूर एहतेशाम के कथा साहित्य में भारतीय मुस्लिम समाज की स्थिति,उसकी सोच एंव उसकी छबि में बदलाव के लिए जद्दोजहद विद्यमान है ।

*** अनुसंधान कार्य की उपयोगिता -**

1. इक्कीसवीं सदी के सजग रचनाकार के रुप में मंजूर एहतेशाम की भारतीय समाज को पहचान होगी ।
2. भारतीय मुस्लिम समाज की स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन एवं उसकी छबि में बदलाव के लिए कई दिशा प्राप्त होगी ।
3. भारत की मिली-जुली गंगा-जमुना तहजीब को नई उर्जा मिलेगी ।
4. आपसी भाईचारा, सांप्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को बढ़ावा मिलेगा ।
5. हिंदी के छात्रों, अनुसंधान कर्ताओं एवं अध्यापकों को इस अनुसंधान का उपयोग होगा ।

*** अनुसंधान पद्धतियाँ -**

किसी भी अनुसंधान कार्य को करत समय अनुसंधान पद्धतियों को अपनाया जाता है । इससे अनुसंधान में तार्कितता, गहनता और गरीमा आती है । इस अनुसंधान कार्य के लिए निम्न अनुसंधान पद्धतियों का अवलंब किया जाना तय किया गया है -

1. विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति
2. वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति
3. तुलनात्मक अनुसधान पद्धति
4. ऐतिहासिक अनुसंधान पद्धति

* **अनुसंधान की सीमाएँ -**

हर अनुसंधान की अपनी सीमाएँ होती है। अनुसंधान कर्ता को उन सीमाओं में रहकर ही अपने कार्य को पूर्ण करना पड़ता है। प्रस्तुत अनुसंधान की भी अपनी सीमाएँ हैं -

1. मंजूर एहतेशाम जी के उपन्यास और कहानियों का ही अध्ययन करना है।
2. मंजूर एहतेशाम जी के केवल समकालीन मुस्लिम रचनाकारों का ही अध्ययन करना है।
3. मंजूर एहतेशाम जी के उपन्यास एवं कहानियों में चित्रित मुस्लिम समाज का ही अध्ययन करना है।

* **अनुसंधान की रुप-रेखा -**

प्रथम अध्याय - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य में चित्रित मुस्लिम समाज की स्थिति

प्रस्तुत अध्याय में आज़ादी के बाद के उन मुस्लिम कथाकारों का विवचेन किया जाएगा,जिन्होंने भारतीय मुस्लिम समाज को अपने साहित्य का विषय बनाया। जैसे - राही मासूम रजा, शानी, अब्दुल बिस्मिल्लाह, असगर वजाहत आदि।

द्वितीय अध्याय - मंजूर एहतेशाम : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इस अध्याय में मंजूर एहतेशाम जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विस्तार से विश्लेषण किया जाएगा। व्यक्तित्व के अंतर्गत जन्म, शिक्षा, पारिवारिक जीवन, नौकरी, उनकी अपनी सोच एवं विचारधारा आदि की उद्‌घाटित किया जाएगा। मंजूर एहतेशाम का जन्म 03 एप्रिल, 1948 को भोपाल में हुआ। वर्तमान में वे भोपाल ही में रहते है।

कृतित्व के अंतर्गत उनकी समय रचनाओं पर, उनकी रचनाधर्मिता पर प्रकाश डाला जाएगा। मंजूर एहतेशाम मूलत: उपन्यासकार हैं। इनके अक तक कुल छह उपन्यास - कुछ दिन और, सूखा बरगद, दास्तान-ए-लापता, बशारत मंजिल, पहर ढलते और मदरसा प्रकाशित हो चुके हैं। इन उपन्यासों का हिंदी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान है। उपन्यासों के अलावा उनके तसबीह, तमाशा तथा अन्य कहानियाँ आदि कहानी-संग्रह भी हिंदी में पर्याप्त लोकप्रिय हुए है।

तृतीय अध्याय - मंजूर एहतेशाम के कथा साहित्य में चित्रित मुस्लिम समाज की स्थिति

प्रस्तुत अध्याय में मंजूर एहतेशाम जी के उपन्यासों एवं कहानियों में चित्रित मुस्लिम समाज की स्थिति का विस्तृत वर्णन किया जाएगा। उनके उपन्यासों के विषय में कहा जाता है, कि उनमें भारतीय मुस्लिम समाज की मुकम्मील तस्वीर है तथा मुस्लिम समाज की समस्याओं की जड़ तक पहुँचने की ईमानदार कोशिश इस दृष्टि से उनके सूखा बरगद और बशारत मंज़िन यह दो उपन्यास विशेष उल्लेखनिय हैं।

चतुर्थ अध्याय - मंजूर एहतेशाम के कथा साहित्य में चित्रित भारत की मिली-तुली संस्कृति

प्रस्तुत अध्याय में मंजूर एहतेशाम के कथा साहित्य में चित्रित भारत की मिली-जुली गंगा-जमुनी संस्कृति को उजागर किया जाएगा। मंजूर एहतेशाम वस्तुतः गंगा-जमुनी तहजीब के लेखक हैं।

पंचम अध्याय - मंजूर एहतेशाम के कथा साहित्य में चित्रित आज़ाद भारत में मुस्लिम समाज की छबि

मंजूर एहतेशाम जी ने अपने उपन्यास एवं कहानियों में आजाद भारत में उसकी छबि आदि का अत्यंत स्पष्ट, किंतु मार्मिक चित्रण किया है। इस अध्याय में उन तमाम पहलूओं पर विचार-विमर्श किया जाएगा।

षष्टम अध्याय - मंजूर एहतेशाम के अंतर्विरोध एवं उनकी समस्याएँ

मंजूर एहतेशाम जी ने अपने उपन्यास एवं कहानियों में मुस्लिम समाज के अंतर्विरोध एवं उनकी समस्याएँ आदि का अत्यंत स्पष्ट एवं निर्भीक चित्रण किया है । अंतः प्रस्तुत अध्याय में इसको विश्लेषित किया जाएगा।

सप्तम अध्याय - उपसंहार एंव निष्कर्ष

इस अध्याय में संपूर्ण अनुसंधान कार्य का सार प्रस्तुत किया जाएगा और अध्ययन एवं अनुसंधान के उपरांत निकाल गए निष्कर्ष दिए जाएँगे।

संदर्भ ग्रंथ सूचि –

1. मंजूर एहतेशाम – कुछ दिन और (उपन्यास),
2. मंजूर एहतेशाम – सूखा बरगद (उपन्यास),
3. मंजूर एहतेशाम – दास्तान–ए–लापता (उपन्यास),
4. मंजूर एहतेशाम – बशारत मंज़िल (उपन्यास),
5. मंजूर एहतेशाम – पहर ढलते (उपन्यास),
6. मंजूर एहतेशाम – मदरसा (उपन्यास),
7. मंजूर एहतेशाम – तसबीह (कहानी संग्रह),
8. मंजूर एहतेशाम – तमाशा तथा अन्य कहानियाँ (कहानी संग्रह),
9. डॉ. तसनीम पटेल – समय के साक्षी : प्रमुख मुस्लिम उपन्यासकार।

निर्देशक

डॉ. ज़हीरूद्दिन रफियोद्दिन पठान

अध्यक्ष, हिंदी विभाग

कै. बाबासाहेब देशमुख गोरठेकर महाविद्यालय,

उमरी, जि. नांदेड.

Dr.Zaheeruddin R. Pathan

Research Guide & Head Dept. of Hindi

Late B.D.Gorthekar College,Umri

Dist.Nanded-431807 (MS)

अनुसंधान–कर्ता

आसिया बेगम

एम.ए. (हिंदी), एम.फिल